# अवसर

भारत इन दिनों दुनिया की शीर्ष अंतरिक्ष ताकतों में गिना जाता है, लेकिन इसके पीछे कई साल की मेहनत है। अंतरिक्ष पहुंचने वाले पहले भारतीय राकेश शर्मा के साथ शुरू हुआ यह सफर बेहद खास रहा है। हमने नजर डाली भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के मील के पत्थरों पर।

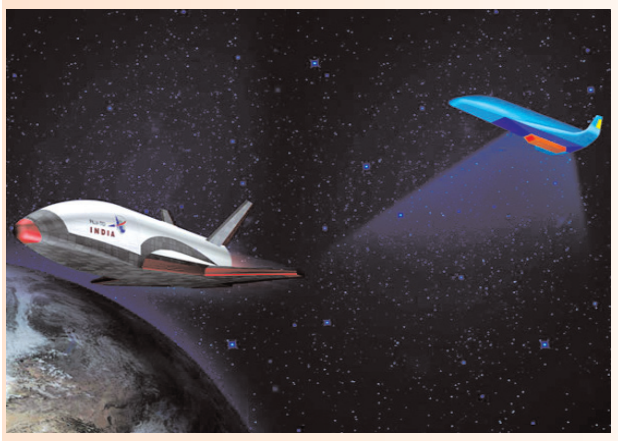

### पहला RLV

भारत ने रियूजेबल लॉन्च व्हीकल (RLV) की पहली टेक्नोलॉजिकल बानगी दिखाई। ये सैटेलाइट को पृथ्वी के आसपास ऑरबिट तक पहुंचाने और फिर लौट आने में दक्षता रखता है। इसे देश का पहला ऐसा स्पेस शटल है, जो किफायती, विश्वसनीय और मांग उठने पर अंतरिक्षत तक शानदार पहुंच देता है। RLV-TD टू स्टेट टू ऑरबिट (TSTO) पूर्णकालिक रियूजेबल व्हीकल की दिशा में पहला बड़ा कदम है।

### पहला भारतीय

हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन और अशोक चक्र विजेता राकेश शर्मा पूर्व भारतीय वायु सेना पायलट है, जो 3 अप्रैल, 1984 को सोयुज टी-11 पर सवार होकर अंतरिक्ष पहुंचने वाले पहले भारतीय बने थे।

### पहली भारतीय महिला

एस्ट्रोनॉट कल्पना चावला मिशन स्पेशलिस्ट और प्राइमरी रोबोटिक आर्म ऑपरेटर के तौर पर 1997 में स्पेस शटल कोलंबिया पर सवार होकर अंतरिक्ष पहुंची पहली भारतीय महिला थीं। कोलंबिया के लौटते वक्त हुए हादसे में उनका निधन हो गया।

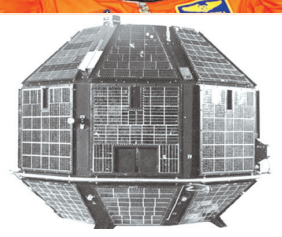

### पहला उपग्रह

देश के पहले सैटेलाइट आर्यभट्ट को यह नाम प्राचीन भारत के जाने-माने खगोलविद् से मिला। ये सैटेलाइट भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने बनाया और इसे 19 अप्रैल, 1975 को सोवियत संघ ने लॉन्च किया था।

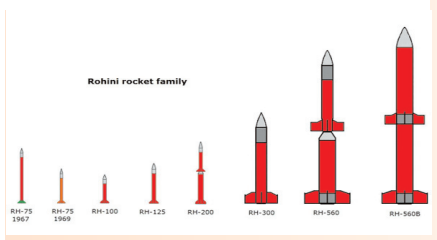


### पहला रॉकेट

रोहिणी उन प्रायोगिक रॉकेट की सीरीज का नाम है, जिसे इसरो ने मौसम और वातावरण संबंधी स्टडी के लिए बनाया था। RH-75 को 20 नवंबर, 1967 को केरल के थुम्बा से लॉन्च किया गया था। नवंबर, 1967 और सितंबर, 1968 के बीच इसने करीब 15 उड़ान पूरी कीं।

### पहली बार, चांद पार

चंद्रयान-1 देश का पहला चंद्र मिशन था। मानवरहित इस एक्सप्लोरेशन मिशन में लूनर ऑर्बिटर और इम्पैक्टर शामिल था, जिसे मून इम्पैक्ट प्रोब नाम दिया गया। इसे 22 अक्टूबर, 2008 को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से PSLV के नए वर्जन से भेजा गया।

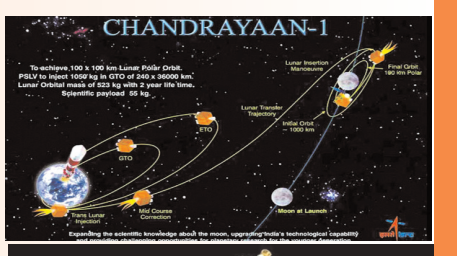


### पहली बार, मंगल पार

इसरो ने मार्स ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान) को 5 नवंबर, 2013 को पृथ्वी की ऑर्बिट में भेजा था और यह 24 सितंबर, 2014 को मंगल की ऑर्बिट में दाखिल हुआ। भारत पहली कोशिश में मंगल की ऑर्बिट में पहुंचने वाला पहला देश बना।

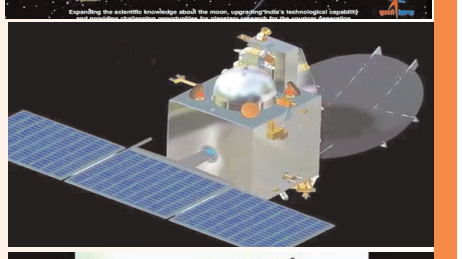

### कम्युनिकेशन सैटेलाइट

हमारा पहला एक्सपेरीमेंटल GEO कम्युनिकेशंस सैटेलाइट APPLE (एरियन पैसेंजर पेलोड एक्सपेरीमेंट) जून, 1981 में एरियन लॉन्च व्हीकल की तीसरी टेस्ट उड़ान से भेजा गया था। 350 किलोग्राम वजनी एप्पल ने 27 महीने तक भारतीय टेलकम्युनिकेशंस स्पेस रिले इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए महत्वपूर्ण काम किया।

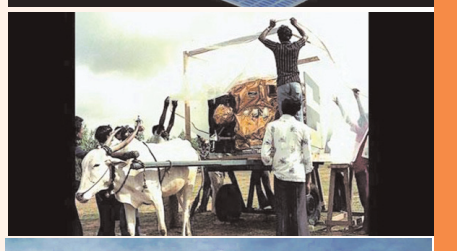

### अंतरिक्ष ऑब्जरवेटरी

इसरो ने पहला मल्टी-वेवलेंग्थ स्पेस ऑब्जरवेटरी 28 सितंबर, 2015 को अंतरिक्ष में भेजा। एस्ट्रोस्टैट नामक इस ऑब्जरवेटरी का उद्देश्य न्यूट्रॉन स्टार रखने वाले बाइनरी स्टार सिस्टम्स में उच्च ऊर्जा की प्रक्रियाओं को समझना था।

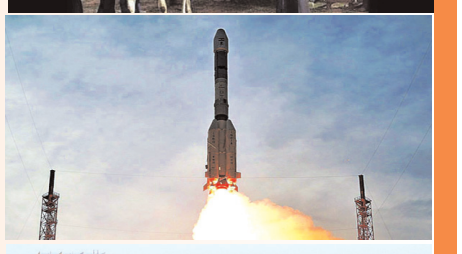

### 20 इन 1 लॉन्च

इसरो के PSLV ने 22 जून, 2016 को एक साथ में 20 उपग्रह को अंतरिक्ष में भेजा। इसके साथ ही वह दुनिया के उन शीर्ष 3 देशों में शुमार हो गया जो एक साथ इतनी संख्या में उपग्रह अंतरिक्ष में भेज सकते हैं।

### भारत का अपना GPS (ग्लोबल पोजिशिनिंग सिस्टम)

भारत का स्वदेशी वैश्विक नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम NAVIC (नेविगेशन विद इंडियन कोंस्टेलेशन) जिसे इसरो ने लॉन्च किया था। इससे भारत और उसके 1,500 किमी के दायरे में आने वाले क्षेत्रों में सटीक समय का पता लगाया जा सकेगा जिससे सेवा क्षेत्रों में और सुधार आ सकेगा। भारत इसके साथ ही अमेरिका, रूस, यूरोप और चीन के बाद पांचवां ऐसा देश बन गया जिसके पास अपनी GPS सिस्टम है।

# पोलिटिकल कंसल्टिंग पर एके मिश्रा से साक्षात्कार

**राजनीति ही एकमात्र विषय है जिसमे अनुभव की जगह अन्वेषण (इनोवेशन ) की ज्यादा जरुरत होती है विशेषकर आज कल की बदलती हुई दुनिया में! यहाँ हर वक़्त मतदाताओ की मनोदशा बदलती रहती है! यही कारण है की एक पार्टी जो चुनाव जीतती है कुछ दिनों के बाद दूसरा चुनाव हार जाती है! ऐसा शायद ही कोई दिग्गज अनुभवी नेता होगा जिसने या जिसकी पार्टी चुनाव न हारी हो ! यही तो सवाल है कि क्यों बड़े बड़े दिग्गज नेता और अनुभवी पार्टियां चुनाव हार जाती है, जबकि उन्होंने चुनाव प्रचार के सभी विकल्प को अपनाया था क्यों वर्षो के राजनैतिक संघर्ष के बाद भी कोई पार्टी उस मुकाम पर नहीं पहुच पाती है जिसका प्रयास वो कर रही है? अनुभव के बाबजूद चूक कहाँ हो जाती है ? सारे प्रयास उस वक्त बेकार हो जाते है जब आप जनता के अव्यक्त राजनैतिक मनोभाव को समझ नहीं पाते है! फलस्वरूप आप बेहतर और निर्याणक चुनावी रणनीति नहीं बना पाते हैं और चुनाव हार जाते हैं।**

**प्रश्न - पोलिटिकल कंसल्टिंग एकदम से नया विषय है, कृपया बताएं की ये क्या है ?**

उत्तर - पोलिटिकल कंसल्टिंग कोई नया विषय कम से कम भारत के लिए नहीं है । पेशेवर आधुनिक पोलिटिकल कंसल्टिंग अवश्य ही एक नई विषयवस्तु हो सकती है। भारत में यह हजारो साल पूर्व से है, पहले भी चाणक्य जैसे महान पोलिटिकल कंसलटेंट हो चुके हैं।

**प्रश्न - पोलिटिकल कंसल्टिंग के क्या क्या निहित उद्देश्य होते हैं और कैसे ये किसी पार्टी या चुनाव की दशा और दिशा को बदल सकती है ?**

उत्तर - वर्तमान में पोलिटिकल कंसल्टिंग का अनंतिम उद्देश्य सभी सर्वसुलभ साधनों का उपयोग करते हुए जनमानस की राजनैतिक विचारधारा को किसी पार्टी की विचारधारा से जोड़ना होता है! सरल शब्दो में अगर इसे समझने की कोशिश करे तो यह एक राजनैतिक और स्ट्रेटेजिक सेवा का प्रयास होता है कि कैसे समाज के एक बड़े वर्ग को समझाया जाये की अमुक पार्टी समाज की अपेक्षायों को पूर्ण करने के लिए सबसे योग्य है जिससे की बहुसंख्यात्मक रूप से मतदाता अपना मतदान किसी एक राजनैतिक पार्टी को करे! निश्चित ही अगर योग्य और कुशल पोलिटिकल कंसलटेंट के सेवाएं ली जाये तो चुनाव के परिणामो को गुणात्मक रूप से बेहतर बनाया जा सकता है!

**प्रश्न - पोलिटिकल कंसल्टिंग का क्या भविष्य आप देखते हैं?**

उत्तर - पूरी दुनिया में लोकतान्त्रिक देशो की संख्या तेजी से बढ़ रही है ! आज के दौर के चुनाव अत्यंत की जटिल हो गए हैं! अतः इन सब को प्रभावी रूप से मैनेज करने के लिए एक्सपर्ट्स की जरूरत होगी। एहि कारन है की आज हर एक प्रत्याशी पोलिटिकल कंसलटेंट की सेवाएं लेना चाहता है।

**प्रश्न - भारत जैसे देश के लिए पोलिटिकल कंसल्टिंग का क्या स्कोप है?**

उत्तर - भले ही अमित शाह जी इसे एक मेक ओवर वर्क मानते हैं पर मेरा ऐसा मानना है की भविष्य में यह एक बहुत बड़ी अंतरास्ट्रीय इंडस्ट्री के रूप में उभरने वाली है। न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी भारत के लिए यह मल्टी बिलियन डॉलर की इंडस्ट्री हो सकती है। नए रोजगार के साथ साथ ये अंतरारास्ट्रीय विदेशी मुद्रा कमाने का भी एक अच्छा स्त्रोत्र भारत के लिए बन सकता है! सबसे बड़ी बात ये है की मात्र थोड़े से प्रयास से भारत इस क्षेत्र में विश्व गुरु बन सकता है ! इसके पीछे कारण ये है की पोलिटिकल कंसल्टिंग का इतिहास भारत में बहुत पुराना है और इस ज्ञान की प्रचुरता हमारे देश में जन जन के पास है! सौभाग्य की बात ये है की हमारे देश में कुशल पोलिटिकल कंसलटेंट बहुत तेजी से तैयार किये जा सकते है क्योंकि कही न कही पोलिटिकल कंसल्टिंग हम सबके जीन में ही है ! अतः इसे ठीक उसी तरह से राष्ट्रीय हित में देखना चाहिए जैसे की राष्ट्र गौरव और अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय के विभिन्न अवसरों को देखा जाता है !

**प्रश्न - एक राज्य स्तरीय चुनाव के संपूर्ण एवं व्यसायिक पोलिटिकल कंसल्टिंग प्रबंधन में क्या क्या किया जाता है?**

उत्तर - देखिये पोलिटिकल कंसल्टिंग एक अत्यंत ही क्लिष्ट विषय है एवं राज्य स्तरीय चुनावों को प्रबंधित करने के लिए एक विशेष पारितंत्र / डिलीवरी मकेनिस्म का गठन करना पड़ता है! पूरे पोलिटिकल कंसल्टिंग प्रोजेक्ट को चार हिस्सो में बाटा जाता है - स्ट्रेटेजिक, टैक्टिकल, टेक्निकल और ऑपरेशनल! हर एक यूनिट अपने आप में महत्वपूर्ण होता है परंतु सबसे महत्वपूर्ण काम स्ट्रेटेजिक और टेक्टिकल डिपार्टमेंट का होता है! एहि दो डिपार्टमेंट यह तय करते हैं संयुक्त रूप से क्या अभियान चलाया जाये जिसका असर जनता के मनमस्तिष्क पैर पड़े और उनके राजनैतिक व्यहार को अपने पक्ष में किया जा सके । टैक्टिकल डिपार्टमेंट स्ट्रेटेजिक डिपार्टमेंट द्वारा विकसित प्रोग्राम को उसी दक्षता से ग्राउंड जीरो पर क्रियान्वित करता है जिससे की मनोवांक्षित राजनैतिक परिणाम मिल सके! टेक्निकल डिपार्टमेंट का काम सिर्फ पहले दो डिपार्टमेंट द्वारा विकसित क्रिया कलापो को तेजी से जन जन तक विभिन्न माध्यमो से पहुंचाना होता है जैसे की फेसबुक, सोशल मीडिया, टीवी इत्यादि। ऑपरेशनल डिपार्टमेंट का काम सारे क्रिया कलाप सुचारू रूप से चले ,इसलिए सभी के बीच एक कोआर्डिनेशन करना होता है!

**प्रश्न - भविष्य की राजनीती और चुनावो में पोलिटिकल कंसल्टिंग विधा की क्या अहम् भूमिका हो सकती है ?**

उत्तर - देखिये जैसे की मैंने पहले ही बताया है की चुनाव या राजनीती विश्व के सबसे जटिल प्रक्रियो में से एक है! भारत के सन्धर्भ में देखा जाये तो यहाँ की राजनैतिक और सामाजिक विविधता को देखते हुए, यहाँ के 120 करोड़ लोगो के राजनैतिक व्यहार को एक पक्ष में मोड़ना शायद दुनिया का सबसे कठिन काम है ! इस हिसाब से इस उद्देश्य पूर्ति के लिए एक विशेष दक्ष टीम की जरुरत हमेशा ही रहेगी ! भविष्य में चुनाव और राजनीती के डायनामिक्स और भी जटिल होने वाले हैं! ऐसा यहाँ के राजनैतिक परितंत्र और पोलिटिकल डायनामिक्स में होने वाले उत्तरोत्तर बदलावों के कारण है ! लगातार मतदातों को सोच और समाज के बिभिन्न घटको के साथ साथ राजनीती के विभिन्न घटको में भी सूक्ष्म स्तरीय बदलाव हो रहे है! आश्चर्य की बात ये है की ये बदलाव इतने सुक्ष्म स्तरीय और अव्यक्त रूप से होते है की इन्हें पहचानना मुश्किल होता है! इन सब के कारण हमेशा ही राजनीती के क्षेत्र में अंतिम समय तक यहाँ तक की मतदान के दिन तक अनिश्चितता की स्तिथि बानी रहती है! अगर इन सभी अनिश्चितता की स्तिथि को व्यस्थित करना है तो एक अत्यंत ही कुशल टीम की जरुरत न सिर्फ चुनावो के पूर्व बल्कि हमेशा ही बानी रहेगी! पोलिटिकल कंसल्टिंग की विधा ने भृत्य राजनैतिक पारितंत्र को नै दिशा देनी शुरू कर दी है और निश्चय ही भविष्य में इसकी भूमिका बहुत बढ़ने वाली है क्योंकि राजनैतिक क्षेत्र में ही सबसे ज्यादा कम्पटीशन होने वाला है और राजनैतिक क्षेत्र का कम्पटीशन किसी भी क्षेत्र के कम्पटीशन से ज्यादा जटिल और अनिश्चित होने के साथ साथ बहुत ही भ्रमात्मक होता है ! इसमें ये पता लगा पाना मुश्किल होता है की मतदाताओं को किन चीजो से प्रबावित कर सकते है !

**प्रश्न - मगर अनुभवी नेता ये कह सकते है की उनके पास तो वर्षो का राजनीति का अनुभव है तो उन्हें पोलिटिकल कंसल्टिंग की क्या जरूरत है ?**

उत्तर - देखिये राजनीति ही एकमात्र विषय है जिसमे अनुभव की जगह अन्वेषण की ज्यादा जरुरत होती है विशेषकर आज कल की बदलती हुई दुनिया में! यहाँ हर वक़्त मतदाताओ की मनोदशा बदलती रहती है! यही कारण है की एक पार्टी जो चुनाव जीतती है कुछ दिनों के बाद दूसरा चुनाव हार जाती है! ऐसा शायद ही कोई दिग्गज अनुभवी नेता होगा जिसने या जिसकी पार्टी चुनाव न हारी हो ! यही तो सवाल है कि क्यों बड़े बड़े दिग्गज नेता और अनुभवी पार्टियां चुनाव हार जाती है, जबकि उन्होंने चुनाव प्रचार के सभी विकल्प को अपनाया था क्यों वर्षो के राजनैतिक संघर्ष के बाद भी कोई पार्टी उस मुकाम पर नहीं पहुच पाती है जिसका प्रयास वो कर रही है? अनुभव के बाबजूद चूक कहाँ हो जाती है ? सारे प्रयास उस वक्त बेकार हो जाते है जब आप जनता के अव्यक्त राजनैतिक मनोभाव को समझ नहीं पाते है! फलस्वरूप आप बेहतर और निर्याणक चुनावी रणनीति नहीं बना पाते हैं और चुनाव हार जाते हैं।

**प्रश्न - आपके हिसाब से किसी राजनैतिक पार्टी / नेता या फिर पोलिटिकल कंसलटेंट के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण कौन सी बात या परिस्थिति होती है?**

उत्तर - किसी समय, स्थान विशेष की राजनैतिक , चुनावी पारितंत्र, इसके घटकों एवं इसके सूक्ष्म सामाजिक राजनैतिक गतिकीय को समझना! सारी सफलता और असफलता यहीं से निर्धारित होती है ! बाकी सारे कि याकलाप जैसे की सोशल मीडिया मैनेजमेंट आदि गौण होते हैं!

**प्रश्न - आजकल सोशल मीडिया इत्यादि का बहुत प्रयोग बढ़ रहा है! आपको क्या लगता है की सोशल मीडिया का क्या और कितना रोल चुनाव में हो सकता है ?**

उत्तर - देखिये सोशल मीडिया, इन्टरनेट, टीवी इत्यादि सिर्फ और सिर्फ किसी सूचना को ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुचने का काम करते है ! मुख्य बात ये है कि ये सब टूल्स है न की टेक्निक्स! ध्यान देने वाली वाली बात ये है की राजनीती एक घोर अनिश्चितता वाला पेशा है और अनिश्चितता का प्रबंधन केवल और केवल प्रभावी स्ट्रेटेजी से ही किया जा सकता है! याद रहे मात्र सोशल मीडिया की एक्सपर्टीज़ या अति उपयोग पोलिटिकल कंसल्टिंग नहीं है! अगर आपकी एकीकृत स्ट्रेटेजी और संयुक्त प्रयास सटीक नहीं है तो इन माध्यमो का विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है ! राजनीती के क्षेत्र में दो प्रमुख पहलु होते है पहला ये की जो अंकंट्रोल्ड कॉम्पोनेन्ट है उसे मैनेज किया जाये और दूसरा यह की जो कंट्रोल्ड है! टूल्स ( जैसे की फेसबुक, मीडिया इत्यादि) कंट्रोल्ड की श्रेणी में आते है इन्हें कोई भी मैनेज कर सकता है! चुनौती अनकंट्रोल्ड, इनविजिबल और लेटेंट पार्ट को मैनेज करने की होती है।